रात्रि क्लास 15-7-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

पदमा-पदमभाग्यशाली बनने लिए सर्वसरवुल जरूर बनना है। जो प्रजा बहुत बनावेंगे। भल गरीब प्रजा बनावे पर बनावे जरूर। साहुकार की इतनी दरकार नहीं। साहुकार सन्यासी आद तो बाप को मिट्टी में मिला देते हैं। उनको मालूम भी नहीं। मिट्टी में मिला देते हो बाप आये कहां से। इसको कहा जाता है घोरअंधियारा। बाकी रोशनी में लाने वाले हो तुम गरीब बच्चे। गरीब महावीर महावीरणी। इस समय बाप वा टीचर क्या सिखला रहे हैं। चुप कर बैठे हैं परन्तु कुछ सिखला रहे हैं? (याद की यात्रा) और भी किसको कोई विचार है? (शान्ति) शान्ति में टिकते हैं ना। शान्ति मुक्ति। पवित्रता। भक्ति में आवाज़ बहुत है। इसमें बिल्कुल आवाज़ नहीं। वाणी से परे धाम जाना है। तुम जैसे निर्वाणधाम में बैठे हो। यह है शान्ति में बैठने की शिक्षा। अर्थ तो पहले से ही बता दिया है। तुम मीठे2 बच्चे भोजन खा रहे हो। भक्ति मार्ग में छाछ पी रहे हैं। शान्ति का दरवा और कोई से मिल न सके। शान्ति के सागर से ही मिल सकता है। सुख भी सुख के सागर से मिलरहा है। तुम कितने पदमापदमभाग्यशाली हो। किसको सामने बैठे हो? दिल में खुशी आती है हम बेहद के बाप से बेहद का, बेहद क्यों कहते हैं क्योंकि तुम भारतवासी ही सारे विश्व में होंगे। थोड़ों को ही सारे विश्व की बादशाही मिलेगी। और खण्ड होंगे ही नहीं। तो अभी कमाई कर लो। बाकी थोड़ा समय है। इसको कहा जाता है अविनाशी कमाई 2। जन्म के लिए कर लो। बाकी बिचारे नींद में सोये पड़े हैं। उनको भी जगाते रहो। तब बाबा कहते हैं कोई ऐसी है जो कहे बाबा हम सिर्फ के लिए तैयार हैं। भल कहां भी भेज दो। हाथ उठाओ? (एक भी नहीं) एक भी नहीं है तो बाबा कहेंगे ब्राह्मण क्या सिखलाती है। कोई का कल्याण नहीं करेंगे? और तो सभी हैं भक्ति मार्ग के घोर अंधियारे में। जागे हो तुम। जो बाप के पास आये हो। जिन्हों को बच्चियों ने जगाया है। शान्त से तुम निहाल हो रहे हो। भक्ति मार्ग में, सतसंगों में जाते थे तो शान्ति से फायदा नहीं होता था। तुम समझते हो हम शान्ति सीखते हैं फिर शान्तिधाम में जावेंगे। बाप इसके लिए ही शान्त सिखलाते हैं। यात्रा कहो या शान्त कहो। तुम बच्चों को खुशी रहनी चाहिए। कहां यह पुराना शरीर छूटे हम अपने शान्तिधाम जावें। तुम इस समय पुराने शरीर से तंग हो। तंग हो शरीर छूटे, जावें। विनाश से पहले शरीर छूटे तो भी तुम बहुत ऊंच घर में जन्मलेते हो थोड़े समय के लिए। छोटे बच्चे 7-8 वर्ष तक फूल हैं। तकलीफ कोई नहीं होती। बहुत ऊंच कुल में जन्म ले सकते हैं। और फिर फिर जैसे महात्मा। कहा भी जाओ तो फूल ही होंगे। खुशबूयें जरूर दिखावेंगे। तुम्हारे चरित्र ही ऐसे होंगे थोड़े टाईम के लिए। पुराना शरीर छोड़ नया लेना है। आत्मा तो पवित्र ही है। आत्मा को यहां ही पवित्र होना है। पिछाड़ी में यह शरीर खत्म हो फिर शुद्ध शरीर मिलेंगी। सुखदाई शरीरी मिलेंगी। अभी तो दुःखदाई है। आत्मा को दुःख देखना पड़ता है पुराने शरीर के कारण। सभी को भूलना है। एक बाप के सिवाय और कोई याद न आये। एक बाप दूसरा न कोई। सभी बच्चों का अन्दर में स्वदर्शनचक्र फिरता है? इस स्वदर्शनचक्र से तुम्हारे पाप कटेंगे। बाकी गला आद नहीं कटता है। आत्मा को दृष्टि चक्र की याद है। बाप ने सुनाया है इसलिए चलते-फिरते 84 के चक्र को याद करते रहो। बाप ने सुनाया है, तो बाप की याद जिससे विकर्म विनाश होंगे। और चक्र फिराने से चक्रवर्ती राजा बनेंगे। दैवी गुण भी धारण करनी है। देवताओं के गुण सदैव गाते रहते हो। तो वह जरूर धारण करनी है! बाप को तो याद करने से वरसा मिलता है स्वर्ग का। स्वर्ग में रहते हैं देवतायें। वह है सर्व गुण सम्पन्न ...

तो बाप को याद करने से विकर्म भी विनाश होंगे और दैवी गुण भी धारण करने का ख्याल आवेगा। बहुत सहज। अलफ याद करने से वे बादशाही याद है। बेरा पार। सो भी गुप्त। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बाप का रूहानी बच्चों प्रति नमस्ते।